साहित्य

भारतीय साहित्य के निर्माता

ईसुरी

अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद'

भारतीय साहित्य के निर्माता

ईसुरी

अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद'

साहित्य अकादेमी

Isuri : Monograph in Hindi by Ayodhya Prasad Gupt 'Kumud', on the 19th century Hindi poet Isuri. Sahitya Akademi, New Delhi (2016). ₹ 50.00

© साहित्य अकादेमी
प्रथम संस्करण : 2016

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय
रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001
विक्रय विभाग, स्वाति, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110 001
वेबसाइट: www.sahitya-akademi.gov.in
ई-मेल : ds.sales@sahitya-akademi.gov.in

क्षेत्रीय कार्यालय
172, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग, दादर, मुंबई-400 014
4, देवेंद्र लाल ख़ान मार्ग, कोलकाता-700025
सेंट्रल कॉलेज परिसर, डॉ. बी. आर. आंबेडकर वीथी, बेंगलूरु-560 001

चेन्नई कार्यालय
मेन बिल्डिंग, गुना बिल्डिंग्स (द्वितीय तल), 443(304)
अन्नासालइ, तेनामपेट, चेन्नई-600 018

ISBN 978-81-260-5061-1

मूल्य : पचास रुपए

मुद्रक : विकास कम्प्यूटर एण्ड प्रिंटर्स, द्रोनिका सिटी, लोनी, गाजियाबाद-201102

अनुक्रम

प्रस्तावना 7

1. 'ईसुरी' : संक्षिप्त जीवन परिचय 11
2. 'ईसुरी' कालीन परिदृश्य 30
3. शृंगार के रससिद्ध कवि 'ईसुरी' 41
4. 'ईसुरी' के काव्य में अध्यात्म और भक्ति 71
5. 'ईसुरी' के काव्य में नीति-तत्त्व 85
6. 'ईसुरी' की लोक-दृष्टि 97
7. 'ईसुरी' का काव्य-शिल्प 116
8. 'ईसुरी' : एक पुनर्मूल्यांकन 125

परिशिष्ट 141

प्रमुख संदर्भ-साहित्य 141

'ईसुरी की कुछ फागों के अंग्रेज़ी काव्यानुवाद 144

हरिवंशराय बच्चन का पत्र 146

ईसुरी रीतिकाल के अंतिम चरण के बुंदेली (हिंदी की सहभाषा) के कवि हैं। उन्होंने प्रेम और भक्ति, नीति तथा लोकदृष्टि को समग्रता में आत्मसात करके बुंदेली बोली को साहित्यिक भाषा के रूप में स्थापित किया, विशाल शब्द-भंडार दिए, आम बोलचाल के मुहावरों को साहित्यिक धरातल पर प्रतिष्ठित किया। हेय समझी जाने वाली ग्रामीण फागों को उन्होंने साहित्यिक विधा के रूप में प्रतिष्ठा दिलाई। इनसे प्रभावित होकर ही मैथिलीशरण गुप्त ने *सिद्धराज* में फाग को स्थान दिया तो दूसरी ओर हरिवंश राय बच्चन ने स्वयं *मधुशाला* में 'ईसुरी की आत्मा की छाया' स्वीकार की। इससे विद्वानों ने उमर खैयाम, फिट्ज़रोल्ड तथा ईसुरी को एक ही दहलीज़ पर खड़ा पाया। वैश्विक स्तर पर उनका मूल्यांकन हुआ। उनकी फागों के अंग्रेज़ी काव्यानुवाद किए गए, फागों पर आधारित अनेक नाटक लिखे तथा मंचित किए गए। ईसुरी के बाद लगभग डेढ़ सौ वर्षों से चौकड़िया फाग की परम्परा, सतत प्रवाह के रूप में हिंदी का भंडार भर रही है। सागर विश्वविद्यालय ने अपनी क्रियाशील पत्रिका का *ईसुरी* नामकरण किया। अनेक विश्वविद्यालयों ने ईसुरी की फागों को पाठ्यक्रमों में स्थान दिया। उनके सम्मान में कुछ राज्य सरकारों तथा संस्थानों ने 'ईसुरी पुरस्कार' को अपनी पुरस्कार-योजनाओं में सम्मिलित किया। इस प्रकार 'ईसुरी' भारतीय साहित्य के प्रमुख निर्माताओं में हैं। इस विनिबंध में सरल, सुबोध भाषा में हिंदी पाठकों को रुचिकर तथा ज्ञानवर्धक सामग्री मिल सकेगी।

अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद' (जन्म : 15 जुलाई, 1944, कोंच, जालौन, उ.प्र.) लेखक, पत्रकार एवं लोककला विशेषज्ञ। बुंदेलखंड की संस्कृति और लोकजीवन पर डेढ़ दर्जन से अधिक पुस्तकें प्रकाशित। छह पुस्तकें प्रकाशन की प्रक्रिया में। संस्कृति विभाग, भारत सरकार की सीनियर फेलोशिप पर *बुंदेलखंड की लोकगाथाएँ* तथा माखन लाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय की फेलोशिप पर *बुंदेलखंड की पत्रकारिता* विषयक पुस्तकों का लेखन। लोक संस्कृति एवं साहित्य में योगदान के लिए बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, उ.प्र. हिंदी संस्थान, उ.प्र. संगीत नाटक अकादमी, भारतीय साहित्य परिषद् प्रयाग सहित अनेक संस्थाओं से पुरस्कृत। आप उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र इलाहाबाद, रामपुर रज़ा लाइब्रेरी, उ.प्र. संगीत नाटक अकादमी लखनऊ के सदस्य भी रहे हैं। आपकी प्रकाशित पुस्तकों में *बुंदेलखंड का लोकजीवन, बुंदेलखंड की फागें, बुंदेलखंड की काव्यात्मक कहावतें, जगनिक, मध्यप्रदेश के तीज त्योहार, कोंच की रामलीला, हिंदी पत्रकारिता का इतिहास* आदि प्रमुख हैं।

साहित्य अकादेमी

ISBN 978-81-260-5062-8

www.sahitya.akademi.gov.in

₹ 50